vinetur

अप्रैल-सितंबर 2026 में भारत का थोक स्कॉच आयात बढ़कर 5.928 करोड़ डॉलर हुआ

छह महीने के आयात मूल्य का लगभग दो-तिहाई जुलाई-सितंबर में आया ; ब्रिटेन से आयात एक साल पहले की तुलना में 620.7% बढ़ा

सोमवार, 23 नवंबर 2026



The Free Press Journal में 21 नवंबर को प्रकाशित आंकड़ों के मुताबिक, अप्रैल से सितंबर 2026 के बीच भारत के थोक स्कॉच व्हिस्की आयात का मूल्य 59.28 मिलियन डॉलर रहा। इस आंकड़े का श्रेय 20 नवंबर की Moneycontrol की एक पिछली रिपोर्ट को दिया गया। यह कुल राशि 2025 की इसी छह-महीने की अवधि में दर्ज मूल्य से पांच गुने से भी अधिक थी। इससे दुनिया के सबसे बड़े व्हिस्की बाज़ारों में से एक में ब्लेंडिंग और वितरण के लिए अहम इस व्यापार प्रवाह में तेज़ी का संकेत मिलता है।

सबसे बड़ी हलचल जुलाई-सितंबर तिमाही में दिखी। इस तीन महीने की अवधि में आयात का मूल्य 36.83 मिलियन डॉलर रहा, जबकि जुलाई-सितंबर 2025 में यह 5.11 मिलियन डॉलर था। प्रकाशित आंकड़ों के आधार पर, यह 31.72 मिलियन डॉलर या 620.7% की वृद्धि थी।

2026 की अप्रैल-जून तिमाही में भी पहले ही मजबूत वृद्धि दिख चुकी थी। इस अवधि में आयात का मूल्य 22.45 मिलियन डॉलर रहा। अगली तिमाही की तुलना में जुलाई-सितंबर का कुल मूल्य 14.38 मिलियन डॉलर अधिक

था—बिना मौसमी समायोजन के 64.1% की वृद्धि। Moneycontrol ने यह भी बताया कि अप्रैल-जून में एक साल पहले की तुलना में 251% की बढ़ोतरी हुई थी।

रिपोर्ट किए गए आंकड़े व्यापार के एक खास हिस्से से संबंधित हैं: यूनाइटेड किंगडम से भारत में आयात की गई थोक स्कॉच व्हिस्की। ये व्हिस्की के समूचे आयात को नहीं दर्शाते और न ही जरूरी तौर पर पूरे भारतीय स्पिरिट बाजार की तस्वीर पेश करते हैं। आंकड़े अमेरिकी डॉलर के मौजूदा मूल्य में दिए गए हैं। प्रकाशित रिपोर्टों में आयात की मात्रा लीटर में, प्रति लीटर औसत कीमत या भेजी गई स्कॉच के प्रकारों का विस्तृत ब्योरा नहीं था।

यह सीमा इसलिए मायने रखती है क्योंकि आयात मूल्य में उछाल को सीधे उपभोक्ता मांग में बदलाव से नहीं जोड़ा जा सकता। अधिक मूल्य बड़ी मात्रा, ऊंची कीमतों, उत्पाद-मिश्रण में बदलाव या इन कारकों के मेल का नतीजा हो सकता है। मात्रा के आंकड़ों या मूल प्रविष्टियों वाली सीमा-शुल्क तालिका के बिना यह तय करना संभव नहीं है कि वृद्धि का कितना हिस्सा भारत में बढ़ती मांग से आया और कितना आयातकों तथा बॉटलरों के मूल्य निर्धारण या ब्लेंडिंग संबंधी फैसलों से।

फिर भी यह व्यापार उल्लेखनीय है, क्योंकि भारत स्कॉच व्हिस्की का एक बड़ा बाजार है। थोक आयात का इस्तेमाल आम तौर पर स्थानीय बॉटलिंग, ब्लेंडिंग और वितरण के लिए किया जाता है, इसलिए यह स्कॉटलैंड के उत्पादकों और भारतीय खरीदारों के बीच कारोबारी गतिविधि का उपयोगी संकेतक है। स्कॉच व्हिस्की का उत्पादन यूनाइटेड किंगडम के हिस्से स्कॉटलैंड में होता है और इस श्रेणी के व्यापार के लिए भारत दक्षिण एशिया का मुख्य आयातक बाजार है।

मुंबई से प्रकाशित अंग्रेज़ी भाषा के अखबार The Free Press Journal ने 21 नवंबर के अपडेट में ये आंकड़े दिए और 20 नवंबर को प्रकाशित पिछली रिपोर्ट के स्रोत के रूप में भारतीय वित्तीय और कारोबारी समाचार माध्यम Moneycontrol का हवाला दिया। इस तरह यह जानकारी सीधे जांची गई आधिकारिक सीमा-शुल्क विज्ञप्ति के बजाय पत्रकारिता संबंधी रिपोर्टों के माध्यम से सामने आई है। उद्धृत सामग्री में मूल सीमा-शुल्क तालिका शामिल नहीं थी।

इस सावधानी के बावजूद, 2026 में दर्ज वृद्धि की रफ्तार उल्लेखनीय थी। तुलना की गई पिछली छह-महीने की अवधि के मुकाबले पांच गुने से अधिक की बढ़ोतरी भारतीय आयातकों की खरीद के तौर-तरीकों में बड़े बदलाव का संकेत देती है। जुलाई-सितंबर तिमाही में 36.83 मिलियन डॉलर का आयात यह भी दर्शाता है कि छह महीनों में खरीद समान रूप से फैली रहने के बजाय वित्त वर्ष आगे बढ़ने के साथ तेज हुई।

तिमाही-दर-तिमाही का रुझान और संदर्भ देता है। यदि अप्रैल-सितंबर का कुल मूल्य 59.28 मिलियन डॉलर रहा और अप्रैल-जून में 22.45 मिलियन डॉलर का आयात हुआ, तो छह महीने के कुल मूल्य का लगभग दो-तिहाई हिस्सा जुलाई-सितंबर में आया। इससे संकेत मिलता है कि समीक्षा की गई अवधि की दूसरी तिमाही में बढ़ोतरी और तेज हुई।

वहीं, अप्रैल-सितंबर 2025 के पूरे दौर का आधार आंकड़ा उपलब्ध न होने से छह महीने की अवधि के साल-दर-साल विश्लेषण की सीमा तय होती है। प्रकाशित रिपोर्टों के मुताबिक, अप्रैल-सितंबर 2026 का कुल मूल्य एक साल पहले की इसी अवधि के मूल्य से पांच गुने से अधिक था, लेकिन उन्होंने पूरे छह महीने के लिए 2025 का सटीक आंकड़ा नहीं दिया। इसलिए व्यापक रुझान स्पष्ट है, लेकिन सार्वजनिक किए गए आंकड़ों से छह महीने की अवधि में वृद्धि का सटीक प्रतिशत स्वतंत्र रूप से नहीं निकाला जा सकता।

यह बढ़ोतरी भारत में प्रीमियम और आयातित स्पिरिट में लगातार बनी रुचि के बीच हुई है। हालांकि, प्रकाशित आंकड़े अपने-आप यह साबित नहीं करते कि आयातित व्हिस्की का कितना हिस्सा खुदरा बिक्री, ब्लेंडिंग या भंडार बढ़ाने के लिए था। थोक व्यापार कई कारोबारी रणनीतियों को दर्शा सकता है, जिनमें भविष्य की मांग की तैयारी, स्टॉक की भरपाई या खरीद के स्रोतों और आपूर्ति अनुबंधों में बदलाव शामिल हैं।

स्कॉटलैंड के उत्पादकों और व्यापक ब्रिटिश पेय उद्योग के कारोबारियों की भारत की खरीद पर करीबी नजर रहती है, क्योंकि यह बाजार बहुत बड़ा है। भारतीय आयातकों के लिए यह श्रेणी व्यावसायिक रूप से महत्वपूर्ण है, क्योंकि थोक

स्कॉच स्थानीय आपूर्ति शृंखला के कई हिस्सों—बॉटलिंग इकाइयों से लेकर ब्लेंडेड व्हिस्की उत्पादों तक—को कच्चा माल दे सकती है। दोनों भारतीय प्रकाशनों के हवाले से आई ताजा रिपोर्ट बताती है कि 2026-27 वित्त वर्ष की पहली छमाही में व्यापार का यह हिस्सा तेजी से बढ़ा, हालांकि आधिकारिक मात्रा और सीमा-शुल्क आंकड़ों के बिना इसके मूल कारणों को अभी पूरी तरह अलग-अलग नहीं किया जा सकता।